International Journal of Applied Research 2017; 3(3): 247-248

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(3): 247-248
www.allresearchjournal.com
Received: 25-01-2017
Accepted: 29-02-2017

स्मिता कुमारी
शोधार्थी, ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, भारत

Corresponding Author:
स्मिता कुमारी
शोधार्थी, ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, भारत

रेणु की कहानियों में स्त्री वेदना की यथार्थ दर्शन

स्मिता कुमारी

सारांश
रेणु ने ग्रामीण–जीवन की वास्तविकता को परत–दर–परत खोल कर पाठक के सामने रखा है। यथार्थ को व्यक्त करने में उन्होंने समाज में घटित होनेवाली घटनाओं को बिंब के रूप में दिखाने का प्रयास किया है। रेणु का मन ठीक इस संवदिया की तरह है। वह संवाद को ठीक–ठीक कह नहीं पाता है। वह अपने गाँव की दुखदायी गाथा को कहते हुए रोता है, बिलखता है।

प्रस्तावना
कथाकार रेणु अपने समय के समाज की परिस्थितियों से बखूबी परिचित थे। तथाकथित कहे जाने वाले संभ्रात परिवार की दयनीय स्थिति का चित्रण उन्होंने बेबाक ढंग से किया है। आर्थिक सुख के लिए लोग किस कदर अपने सबंधियों पर कहर बरपाते हैं। इस तथ्य से रेणु 'संवदिया' कहानी में रू–ब–रू कराते हैं। बड़ी बहुरिया की स्थिति आज ऐसी ही हो गयी है कि उसे दो–जून की रोटी भी नहीं मिल पाती है। यह वही बड़ी बहुरिया है जिसके पीछे नौकर–नौकरानी सदैव खड़े रहते थे। लेकिन बिडंबना है कि खुद का देवर भी पूछता नहीं। कहना न होगा कि यह न केवल बड़ी बहुरिया की यथार्थ की बयाँ है बल्कि यहाँ बड़ी बहुरिया उस असंख्य निराश्रित, अबला की प्रतीक है, जो अपनों के बीच जीवन जीने के लिए विवश हैं। लेखक लिखते हैं– ''बड़ी हवेली अब नाममात्र की बड़ी हवेली है। जहाँ दिन–रात नौकर–नौकरानियों और जन–मजदूरों की भीड़ लगी रहती थी, वहाँ आज हवेली की बड़ी बहुरिया अपने हाथ से सूपा में अनाज लेकर झटक रही है। इन हाथों में सिर्फ मेहँदी लगाकर ही गाँव की नाइन परिवार पालती थी कहाँ गये वे दिन?''(1)

सगुण भक्ति धारा के शिरमौर, गोस्वामी तुलसीदास ने पति के बिना नारी की यथार्थ स्थिति कैसी होती है, उसका सुंदर चित्रण रामचरितमानस में किया है। यह सर्वविदत है कि विधवा महिला की स्थिति बेहद नाजुक हो जाती है। तुलसी के इस दोहे से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है–

''जिय बिनु देह नदी बिनु बारी
तैसहीं नाथ पुरुष बिनु नारी।''(2)

आज इक्कीसवीं सदी में नारी की स्थिति वैसी नहीं रही, जैसी पहले हुआ करती थी। नारी अब भोग्या बन कर नहीं रह सकती वरन् वह पुरुष से बराबरी का हक चाहती है। शिक्षा और रोजगार ने उसे अपने पैरों पर खड़ा होने का अधिकार दिया है। बह अब अपने नैतिक अधिकार और कर्तव्य को जानती है और इसके लिए वह पंचायत से लेकर न्यायालय की चौखट तक जाने की जीवट और जिजीविषा रखती है।

रेणु ने 'संवदिया' कहानी में संयुक्त परिवार के खोखलेपन को नंगा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। चंद–पैसों की खातिर किस प्रकार से आपसी रक्त संबंधों में भी दूरियाँ बढ़ती है, 'संवदिया' कहानी इसका दस्तावेज है। बड़ी बहुरिया के पति अब संसार में नहीं रहे। इसके फलस्वरूप उसके देवरों ने उस पर अनवरत जुल्म जारी रखा। जिसके कारण बड़ी बहुरिया टूट जाती है।

इस दर्दनाक घटना का गवाह स्वयं लेखक हरगोबिन के रूप में है। ऐसी घटनाओं की बारंबरता कमोबेश आज भी समाज में देखी जाती है। रेणु ने संवदिया में इसी संदर्भ में लिखा है–

''बड़े भैया के मरने के बाद ही जैसे सब खेल खत्म हो गया। तीनों भाइयों ने आपस में लड़ाई–झगड़ा शुरू कर दिया। रैयतों ने जमीन पर दावे करके दखल करके दखल किया। फिर, तीनों भाई गाँव छोड़कर शहर में जा बसे, रह गयी बड़ी बहुरिया–कहाँ जाती बेचारी!..... बड़ी बहुरिया की देह से जेवर खींच–छीनकर बँटवारे की लीला हुई थी, हरगोबिन ने देखी है अपनी आँखों से द्रौपदी–चीरहरण लीला! बनारसी साड़ी को तीन टुकड़े करके बंटवारा किया था,

निर्दय भाइयों ने। बेचारी बड़ी बहुरिया!''(3)

रेणु ने 'संवदिया' कहानी के माध्यम से समाज के उस वास्तविक स्वरूप का दिग्दर्शन करवाया है, जो ग्रामीण संस्कृति की जान है। वर्तमान समय में भी किसी खास व्यक्ति के द्वारा किसी गाँव की प्रसिद्धि देखी जाती है। संवदिया कहानी में भी रेणु ने इसी नब्ज को पकड़ा है और किसी भी परिस्थिति मे बड़ी बहुरिया को गाँव से नहीं जाने देता है। रेणु हरगोबिन के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि– बड़ी बहुरिया के चले जाने से गाँव की सब कुछ खत्म हो जाएगी। यहाँ लेखक की सामाजिक चेतना स्पष्ट होती है।

लेखक ने हरगोबिन के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को व्यक्त किया है, कि यदि बड़ी बहुरिया गाँव से चली गयी तो गाँव की बदनामी होगी। लेकिन यह सोच वैश्वीकरण के महाक्रान्ता के जबड़े में फंसकर बेजान हो गयी हैं जहाँ रक्त–संबंध भी पैसों के आगे क्षीण होने लगे हैं। रेणु का सामाजिक यथार्थ अब अपने रंगहीन दुनिया में मस्त है। यह कहना अतिरेक नहीं होगा कि रेणु का सामाजिक तना–बना मकड़े के समान अपने ही प्रगतिशील विचार की भू–भूलैया में उलझकर मृतप्राय हो गया है।

रेणु ने सामाजिक सड़ांध की भी खबर ली है। झूठी–शान पर व्यंग्य करते हुए वे लिखते हैं– ''नहीं मायजी! जमीन–जायदाद अभी कुछ कम नहीं। जो है, वही बहुत है। टूट गयी है, तो आखिर बड़ी हवेली ही है। 'स्वांग' नहीं यह बात ठीक है। मगर, बड़ी बहुरिया का तो सारा गाँव ही परिवार है।''(4)

यह सर्वविदित है कि बेटी अपने पिता के यहाँ ज्यादा सुख अनुभव करती है। कथाकार रेणु 'संवदिया' कहानी में गाड़ी में निरगुन गानेवाला सूरदास के माध्यम से कहलवाते हैं–

> ''कि आहो रामा!.....
> नैहर को सुख सपन भयो अब,
> देश पिया को डोलिया चली.....ई.....ई.....ई,
> भाई रोओ मति, यही करम की गति.....!!''(5)

रेणु ने यहाँ निरगुन के माध्यम से खत्म हो रही सामाजिक ढांचे को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया है। लोग भौतिक सुख के लिए अपने में मस्त रहने को अभिशप्त होते जा रहे हैं। जिसके कारण सामाजिकता का स्वरूप छिन–भिन्न हो रहा है। नारी के लिए मायके (नैहर) का क्या महत्व है? इससे लेखक पाठक को रू–ब–रू कराते हैं। साथ ही साथ मानवीय संबंधों को स्पंदित भी कराने का अथक प्रयास कर रहे हैं। सूफी काव्यधारा के प्रमुख हस्ताक्षर मलिक मुहम्मद जायसी ने 'पदमावत' में नैहर के महत्व को उद्घाटित करने का प्रयास किया है–

> ''ए रानी! मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी।
> जौ लागि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु
> आजू।''(6)

मानव जीवन में समाज की सहभागिता पर लेखक ने अपने विचार से, अपनी रचनाओं से और अपने संपूर्ण साहित्यिक अवदान से लोगों को जागृत करने का मुकम्मल प्रयास किया है।

प्रेमचंद ने 'ईदगाह' कहानी के 'हामिद' के द्वारा बूढ़ी अमीना की आँख के आँसू की अविरल धारा को रोकने प्रयास किया। वहीं भीष्म साहनी ने शामनाथ 'चीफ की दावत' के पात्र के माध्यम से हर उस माँ की करूणा व्यथा को एक दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत किया है। यहाँ कहना होगा कि प्रत्येक पुत्र 'चीफ की दावत' का शामनाथ नहीं हो पाता है। कोई ना कोई पुत्र 'हरगोबिन' बन कर बड़ी बहुरिया का अबलंब बनता है।

निष्कर्षतः रेणु ने अपनी कहानियों एवं लोक कथा रिपोर्ताज में ग्रामीण जीवन के सम्पूर्ण सामाजिक यथार्थ और जीवन की त्रिवेणी का समाहार कर संपूर्ण कृषक जीवन की त्रासदी को जोड़ा है। उनकी कहानियाँ समाज की विसंगतियों का ज्वलंत दस्तावेज है। यह कहना अतिरेक नहीं होगा कि रेणु ने अपनी कहानियों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण एक लेखक कम, भोक्ता अधिक होकर किया है।

संदर्भ–सूची

1. रेणु की आंचलिक कहानियाँ : संपादक–दक्षिणेश्वर रेणु पृ0– 33
2. रामचरितमानस : तुलीसदास पृ0– 445
3. रेणु की आंचलिक कहानियाँ : संपादक–दक्षिणेश्वर रेणु पृ0– 33
4. रेणु की आंचलिक कहानियाँ : संपादक–दक्षिणेश्वर रेणु पृ0– 37
5. रेणु की आंचलिक कहानियाँ : संपादक–दक्षिणेश्वर रेणु पृ0– 39
6. पदमावत : कविता कोश (kavitakosh.org)